Flight to Success

सच होंगे सपने

शिक्षित और समर्थ भारत निर्माण की दिशा में एक प्रयत्न

Kamla Sagar School

Content

1. Swami Vivekanand (Great Personality)
2. IIT-JEE Exam
3. All India Pre Medical Test (AIPMT)
4. Dr. APJ Abdul Kalam (Great Personality)
5. NDA Exam Pattern
6. N. R. Narayana Murthy (Great Personality)
7. SSC CHSL Exam after 12th
8. Ratan Tata (Great Personality)
9. Colleges Ranking

महान प्रेरणा स्त्रोत – स्वामी विवेकानंद

भारतीय संस्कृति को विश्व स्तर पर पहचान दिलाने वाले महापुरुष स्वामी विवेकानंद जी का जन्म 12 जनवरी 1863 को सूर्योदय से 6 मिनट पूर्व 6 बजकर 33 मिनट 33 सेकेन्ड पर हुआ। भुवनेश्वरी देवी के विश्वविजयी पुत्र का स्वागत मंगल शंख बजाकर मंगल ध्वनी से किया गया। ऐसी महान विभूती के जन्म से भारत माता भी गौरवान्वित हुई।

बालक की आकृति एवं रूप बहुत कुछ उनके सन्यासी पितामह दुर्गादास की तरह था। परिवार के लोगों ने बालक का नाम दुर्गादास रखने की इच्छा प्रकट की, किन्तु माता द्वारा देखे स्वपन के आधार पर बालक का नाम वीरेश्वर रखा गया।प्यार से लोग 'बिले' कह कर बुलाते थे। हिन्दू मान्यता के अनुसार संतान के दो नाम होते हैं, एक राशी का एवं दूसरा जन साधारण में प्रचलित नाम , तो अन्नप्रासन के शुभ अवसर पर बालक का नाम नरेन्द्र नाथ रखा गया।

नरेन्द्र की बुद्धी बचपन से ही तेज थी।बचपन में नरेन्द्र बहुत नटखट थे। भय, फटकार या धमकी का असर उन पर नहीं होता था। तो माता भुवनेश्वरी देवी ने अद्भुत उपाय सोचा, नरेन्द्र का अशिष्ट आचरण जब बढ जाता तो, वो शिव शिव कह कर उनके ऊपर जल डाल देतीं। बालक नरेन्द्र एकदम शान्त हो जाते। इसमे संदेह नही की बालक नरेन्द्र शिव का ही रूप थे।

माँ के मुहँ से रामायण महाभारत के किस्से सुनना नरेन्द्र को बहुत अच्छा लगता था। बालयावस्था में नरेन्द्र नाथ को गाडी पर घूमना बहुत पसन्द था। जब कोई पूछता बडे हो कर क्या बनोगे तो मासूमियत से कहते कोचवान बनूँगा। पाश्चात्य सभ्यता में विश्वास रखने वाले

पिता विश्वनाथ दत्त अपने पुत्र को अंग्रेजी शिक्षा देकर पाश्चातय सभ्यता में रंगना चाहते थे। किन्तु नियती ने तो कुछ खास प्रयोजन हेतु बालक को अवतरित किया था।

ये कहना अतिश्योक्ती न होगा कि भारतीय संस्कृती को विश्वस्तर पर पहचान दिलाने का श्रेय अगर किसी को जाता है तो वो हैं स्वामी विवेकानंद। व्यायाम, कुश्ती,क्रिकेट आदी में नरेन्द्र की विशेष रूची थी। कभी कभी मित्रों के साथ हास -परिहास में भी भाग लेते। जनरल असेम्बली कॉलेज के अध्यक्ष विलयम हेस्टी का कहना था कि नरेन्द्रनाथ दर्शन शास्त्र के अतिउत्तम छात्र हैं। जर्मनी और इग्लैण्ड के सारे विश्वविद्यालयों में नरेन्द्रनाथ जैसा मेधावी छात्र नहीं है।

नरेन्द्र के चरित्र में जो भी महान है, वो उनकी सुशिक्षित एवं विचारशील माता की शिक्षा का ही परिणाम है।बचपन से ही परमात्मा को पाने की चाह थी।डेकार्ट का अंहवाद, डार्विन का विकासवाद, स्पेंसर के अद्वेतवाद को सुनकर नरेन्द्रनाथ सत्य को पाने का लिये व्याकुल हो गये। अपने इसी उद्देश्य की पूर्ती हेतु ब्रह्मसमाज में गये किन्तु वहाँ उनका चित्त शान्त न हुआ। रामकृष्ण परमहंस की तारीफ सुनकर नरेन्द्र उनसे तर्क के उद्देश्य से उनके पास गये किन्तु उनके विचारों से प्रभावित हो कर उन्हे गुरू मान लिया। परमहसं की कृपा से उन्हे आत्म साक्षात्कार हुआ। नरेन्द्र परमहंस के प्रिय शिष्यों में से सर्वोपरि थे। 25 वर्ष की उम्र में नरेन्द्र ने गेरूवावस्त्र धारण कर सन्यास ले लिया और विश्व भ्रमण को निकल पडे।

1893 में शिकागो विश्व धर्म परिषद में भारत के प्रतीनिधी बनकर गये किन्तु उस समय युरोप में भारतीयों को हीन दृष्टी से देखते थे। उगते सूरज को कौन रोक पाया है, वहाँ लोगों के विरोध के बावजूद एक प्रोफेसर के प्रयास से स्वामी जी को बोलने का अवसर मिला। स्वामी जी ने बहिनों एवं भाईयों कहकर श्रोताओं को संबोधित किया। स्वामी जी के मुख से ये शब्द सुनकर करतल ध्वनी से उनका स्वागत हुआ। श्रोता उनको मंत्र मुग्ध सुनते रहे निर्धारित समय कब बीत गया पता ही न चला। अध्यक्ष गिबन्स के अनुरोध पर स्वामी जी आगे बोलना शुरू किये तथा 20 मिनट से अधिक बोले। उनसे अभिभूत हो हज़ारों लोग उनके शिष्य बन

गये। आलम ये था कि जब कभी सभा में शोर होता तो उन्हे स्वामी जी के भाषण सुनने का प्रलोभन दिया जाता सारी जनता शान्त हो जाती।

अपने व्यख्यान से स्वामी जी ने सिद्ध कर दिया कि हिन्दु धर्म भी श्रेष्ठ है, उसमें सभी धर्मों समाहित करने की क्षमता है। इस अद्भुत सन्यासी ने सात समंदर पार भारतीय संसकृती की ध्वजा को फैराया। स्वामी जी केवल संत ही नहीं देशभक्त, वक्ता, विचारक, लेखक एवं मानव प्रेमी थे। 1899 में कोलकता में भीषण प्लेग फैला, अस्वस्थ होने के बावजूद स्वामी जी ने तन मन धन से महामारी से ग्रसित लोगों की सहायता करके इंसानियत की मिसाल दी। स्वामी विवेकानंद ने, 1 मई,1897 को रामकृष्ण मिशन की स्थापना की। रामकृष्ण मिशन, दूसरों की सेवा और परोपकार को कर्मयोग मानता है जो कि हिन्दुत्व में प्रतिष्ठित एक महत्वपूर्ण सिध्दान्त है।

39 वर्ष के संक्षिप्त जीवन काल में स्वामी जी ने जो अद्भुत कार्य किये हैं, वो आने वाली पिढीयों को मार्ग दर्शन करते रहेंगे। 4 जुलाई 1902 को स्वामी जी का अलौकिक शरीर परमात्मा मे विलीन हो गया।

स्वामी जी का आदर्श- “उठो जागो और तब तक न रूको जब तक मंजिल प्राप्त न हो जाए” अनेक युवाओं के लिये प्रेरणा स्त्रोत है। स्वामी विवेकानंद जी का जन्मदिन राष्ट्रीय युवा दिवस के रूप में मनाया जाता है। उनकी शिक्षा में सर्वोपरी शिक्षा है "मानव सेवा ही ईश्वर सेवा है।"

Indian Institute of Technology Joint Entrance Examination (IIT-JEE)

IIT ROORKEE

Joint Entrance Examination (JEE) is an all India common engineering entrance examination which is conducted for admission in various engineering colleges and courses all over the country.

In 2012, CBSE (Central Board of Secondary Education) announced this common examination in place of AIEEE and IIT-JEE. JEE is being conducted in two parts, JEE-Main and JEE-Advanced. JEE-Advanced is for admission in Indian Institutes of Technology (IITs), and Indian School of Mines Dhanbad (to be converted into IIT) and JEE-Main exam is for admission in IIITs (Indian Institutes of Information Technology), NITs (National Institutes of Technology), CFTIs (Central Funded Technical Institute) and IIEST Shibpur, for admission to its dual degree programme.

There are some colleges like IISER's, RGIPT, IISc and others which use score of JEE Advanced for admission. These are not participating institutes of Central IIT JEE Advanced counselling of which all IITs and ISM are members. Any student who takes admission in IIT's or ISM cannot appear for JEE-Advanced exam next year, but the same is not the case with IISc, IISER, RGIPT and other institutes as these institutes only use JEE Advanced score for admission.

In September 2013, the IIT Council approved the decision of the Joint Admission Board to continue with the two-phase JEE pattern ("Main" followed by "Advanced") for IITs and ISM in 2014.

Joint Seat Allocation Authority 2015 (JoSAA 2015) conducted the joint admission process for a total of 18 IITs, ISM Dhanbad, 32 NITs, 18 IIITs and 18 other Government Funded Technical Institutes (GFTIs).

JEE Main

JEE-Main Exam has two papers, Paper-1 and Paper-2. Candidates may opt for either or both of them. Both papers contain multiple choice questions.

- Paper-1 is for admission in B.E./B.Tech (online and offline).
- Paper-2 is for admission in B.Arch and B.Planning (offline only).
- 1.3 Million students including 316,000 female candidates appeared for JEE-Main exam in 2014.

JEE Advanced

Students who qualify JEE-Mains can appear for JEE-Advanced examination. Approximately 150,000 students qualify to appear for JEE-Advanced examination.

- 1.19 lakh students appeared for JEE Advanced in 2014 out of which 27,152 qualified of which 14,269 i.e. 52.55% qualified from 11 Indian cities.
- In 2015, Satvat Jagwani from Satna, Madhya Pradesh scored 469 to top the exam. According to the IIT-Bombay, 26,456 candidates qualified for admission to IITs and ISM

JEE main counselling

CBSE and CSAB are two different and independent boards. CBSE conducts JEE (Main) examination and publishes the merit list. CSAB only uses the merit list published by CBSE for seat allocation purposes. In previous years the admission process was conducted through CCB (Central Counseling Board), while this year CCB has been renamed as CSAB (Central Seat Allocation Board) for completing the seat allocation process.

JEE Main Selection Procedure

Candidates are given admissions to IITs and ISM on the basis of All India Ranks(AIR) calculated with JEE Main scores and normalized marks of 12th Class in the ratio of 60:40.

All India Pre Medical Test (AIPMT)

AIIMS DELHI

Current exam pattern

The exam is conducted in a single stage that usually occurs on the first Sunday of May. The examination consists of one paper containing 180 objective type questions from Physics, Chemistry and Biology (Botany & Zoology), having 45 questions from each subject. The exam duration is 3 hours. Each question carries 4 marks. For each incorrect response, one mark is deducted from the total score. However, no deduction from the total score is made if no response is indicated for an item. Indication of more than one answer for a question is deemed an incorrect response and negatively marked.

Under Graduate Courses

- Bachelor of Science in Biology
- Bachelor of Science in Zoology
- Bachelor of Science in Environmental Science and Water Management

- Bachelor of Science in Genetics
- Bachelor of Veterinary Science in Animal Production and Management
- Bachelor of Veterinary Medicine
- Bachelor of Ayurvedic Medicine and Surgery
- Bachelor of Dental Surgery
- Bachelor of Pharmacy
- Bachelor of Science in Nursing

Diploma Courses

- Diploma in Pharmacy
- Diploma in Human Biology

SYLLABUS for All India Pre-Medical/Pre-Dental Entrance Test(AIPMT)

PHYSICS

S.No.	CLASS XI	CLASS XII
1.	Physical world and measurement	Electrostatics
2.	Kinematics	Current Electricity

3.	Laws of Motion	Magnetic Effects of Current and Magnetism
4.	Work, Energy and Power	Electromagnetic Induction and Alternating Currents
5.	Motion of System of Particles and Rigid Body	Electromagnetic Waves
6.	Gravitation	Optics
7.	Properties of Bulk Matter	Dual Nature of Matter and Radiation
8.	Thermodynamics	Atoms and Nuclei
9.	Behaviour of Perfect Gas and Kinetic Theory	Electronic Devices
10.	Oscilation and waves	

डॉक्टर ए. पी. जे. अब्दुल कलाम

जन्म: 15 अक्टूबर 1931, रामेश्वरम, तमिलनाडु

मृत्यु: 27 जुलाई, 20 15, शिलोंग, मेघालय

पद/कार्य: भारत के पूर्व राष्ट्रपति

उपलब्धियां: एक वैज्ञानिक और इंजिनियर के तौर पर उन्होंने रक्षा अनुसन्धान और विकास संगठन (डीआरडीओ) और भारतीय अंतरिक्ष अनुसंधान संगठन (इसरो) के कई महत्वपूर्ण परियोजनाओं पर कार्य किया

डॉ ए. पी. जे. अब्दुल कलाम एक प्रख्यात भारतीय वैज्ञानिक और भारत के 11वें राष्ट्रपति थे। उन्होंने देश के कुछ सबसे महत्वपूर्ण संगठनों (डीआरडीओ और इसरो) में कार्य किया। उन्होंने वर्ष 1998 के पोखरण द्वितीय परमाणु परिक्षण में भी महत्वपूर्ण भूमिका निभाई। डॉ कलाम भारत के अंतरिक्ष कार्यक्रम और मिसाइल विकास कार्यक्रम के साथ भी जुड़े थे। इसी कारण उन्हें 'मिसाइल मैन' भी कहा जाता है। वर्ष 2002 में कलाम भारत के राष्ट्रपति चुने गए और 5 वर्ष की अवधि की सेवा के बाद, वह शिक्षण, लेखन, और सार्वजनिक सेवा में लौट आए।

उन्हें भारत के सर्वोच्च नागरिक सम्मान, भारत रत्न सहित कई प्रतिष्ठित पुरस्कारों से सम्मानित किया गया।

प्रारंभिक जीवन :

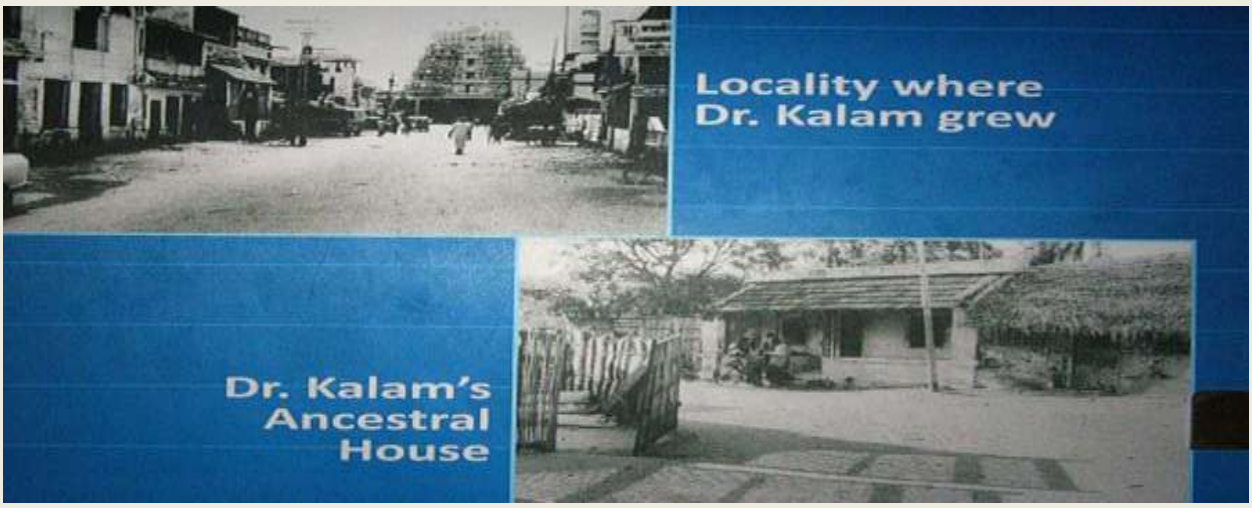

अवुल पकिर जैनुलअबिद्दीन अब्दुल कलाम का जन्म 15 अक्टूबर 1931 को तमिलनाडु के रामेश्वरम में एक मुसलमान परिवार मैं हुआ। उनके पिता जैनुलअबिद्दीन एक नाविक थे और उनकी माता अशिअम्मा एक गृहणी थीं। उनके परिवार की आर्थिक स्थिति ठीक नहीं थे इसलिए उन्हें छोटी उम्र से ही काम करना पड़ा। अपने पिता की आर्थिक मदद के लिए बालक कलाम स्कूल के बाद समाचार पत्र वितरण का कार्य करते थे। अपने स्कूल के दिनों में कलाम पढाई-लिखाई में सामान्य थे पर नयी चीज़ सीखने के लिए हमेशा तत्पर और तैयार रहते थे। उनके अन्दर सीखने की भूख थी और वो पढाई पर घंटो ध्यान देते थे। उन्होंने अपनी स्कूल की पढाई रामनाथपुरम स्च्वार्ट्ज़ मैट्रिकुलेशन स्कूल से पूरी की और उसके बाद तिरूचिरापल्ली के सेंठ जोसेफ्स कॉलेज में दाखिला लिया, जहाँ से उन्होंने सन 1954 में भौतिक विज्ञान में स्नातक किया। उसके बाद वर्ष 1955 में वो मद्रास चले गए जहाँ से उन्होंने

एयरोस्पेस इंजीनियरिंग की शिक्षा ग्रहण की। वर्ष 1960 में कलाम ने मद्रास इंस्टिट्यूट ऑफ़ टेक्नोलॉजी से इंजीनियरिंग की पढाई पूरी की।

कैरियर :

मद्रास इंस्टिट्यूट ऑफ़ टेक्नोलॉजी से इंजीनियरिंग की पढाई पूरी करने के बाद कलाम ने रक्षा अनुसन्धान और विकास संगठन (डीआरडीओ) में वैज्ञानिक के तौर पर भर्ती हुए। कलाम ने अपने कैरियर की शुरूआत भारतीय सेना के लिए एक छोटे हेलीकाप्टर का डिजाईन बना कर किया। डीआरडीओ में कलाम को उनके काम से संतुष्टि नहीं मिल रही थी। कलाम पंडित जवाहर लाल नेहरू द्वारा गठित 'इंडियन नेशनल कमेटी फॉर स्पेस रिसर्च' के सदस्य भी थे। इस दौरान उन्हें प्रसिद्ध अंतरिक्ष वैज्ञानिक विक्रम साराभाई के साथ कार्य करने का अवसर मिला। वर्ष 1969 में उनका स्थानांतरण भारतीय अंतरिक्ष अनुसंधान संगठन (इसरो) में हुआ। यहाँ वो भारत के सॅटॅलाइट लांच व्हीकल परियोजना के निदेशक के तौर पर नियुक्त किये गए थे। इसी परियोजना की सफलता के परिणामस्वरूप भारत का प्रथम उपग्रह 'रोहिणी' पृथ्वी की कक्षा में वर्ष 1980 में स्थापित किया गया। इसरो में शामिल होना कलाम के कैरियर का सबसे अहम मोड़ था और जब उन्होंने सॅटॅलाइट लांच व्हीकल परियोजना पर कार्य आरम्भ किया तब उन्हें लगा जैसे वो वही कार्य कर रहे हैं जिसमे उनका मन लगता है।

1963-64 के दौरान उन्होंने अमेरिका के अन्तरिक्ष संगठन नासा की भी यात्रा की। परमाणु वैज्ञानिक राजा रमन्ना, जिनके देख-रेख में भारत ने पहला परमाणु परिक्षण किया, ने कलाम को वर्ष 1974 में पोखरण में परमाणु परिक्षण देखने के लिए भी बुलाया था।

सत्तर और अस्सी के दशक में अपने कार्यों और सफलताओं से डॉ कलाम भारत में बहुत प्रसिद्ध हो गए और देश के सबसे बड़े वैज्ञानिकों में उनका नाम गिना जाने लगा। उनकी ख्याति इतनी बढ़ गयी थी की तत्कालीन प्रधानमंत्री इंदिरा गाँधी ने अपने कैबिनेट के मंजूरी के बिना ही उन्हें कुछ गुप्त परियोजनाओं पर कार्य करने की अनुमति दी थी।

भारत सरकार ने महत्वाकांक्षी 'इंटीग्रेटेड गाइडेड मिसाइल डेवलपमेंट प्रोग्राम' का प्रारम्भ डॉ कलाम के देख-रेख में किया। वह इस परियोजना के मुख्य कार्यकारी थे। इस परियोजना ने देश को अग्नि और पृथ्वी जैसी मिसाइलें दी है।

जुलाई 1992 से लेकर दिसम्बर 1999 तक डॉ कलाम प्रधानमंत्री के वैज्ञानिक सलाहकार और रक्षा अनुसन्धान और विकास संगठन (डीआरडीओ) के सचिव थे। भारत ने अपना दूसरा परमाणु परिक्षण इसी दौरान किया था। उन्होंने इसमें एक महत्वपूर्ण भूमिका निभाई थी। आर. चिदंबरम के साथ डॉ कलाम इस परियोजना के समन्वयक थे। इस दौरान मिले मीडिया कवरेज ने उन्हें देश का सबसे बड़ा परमाणु वैज्ञानिक बना दिया।

वर्ष 1998 में डॉ कलाम ने हृदय चिकित्सक सोमा राजू के साथ मिलकर एक कम कीमत का 'कोरोनरी स्टेंट' का विकास किया। इसे 'कलाम-राजू स्टेंट' का नाम दिया गया।

भारत के राष्ट्रपति :

एक रक्षा वैज्ञानिक के तौर पर उनकी उपलब्धियों और प्रसिद्धि के मद्देनज़र एन. डी. ए. की गठबंधन सरकार ने उन्हें वर्ष 2002 में राष्ट्रपति पद का उमीदवार बनाया। उन्होंने अपने प्रतिद्वंदी लक्ष्मी सहगल को भारी अंतर से पराजित किया और 25 जुलाई 2002 को भारत के 11वें राष्ट्रपति के रूप में शपथ लिया। डॉ कलाम देश के ऐसे तीसरे राष्ट्रपति थे जिन्हें राष्ट्रपति बनने से पहले ही भारत रत्न ने नवाजा जा चुका था। इससे पहले डॉ राधाकृष्णन और डॉ जाकिर हुसैन को राष्ट्रपति बनने से पहले 'भारत रत्न' से सम्मानित किया जा चुका था।

उनके कार्यकाल के दौरान उन्हें 'जनता का राष्ट्रपति' कहा गया। अपने कार्यकाल की समाप्ति पर उन्होंने दूसरे कार्यकाल की भी इच्छा जताई पर राजनैतिक पार्टियों में एक राय की कमी होने के कारण उन्होंने ये विचार त्याग दिया।

12वें राष्ट्रपति प्रतिभा पाटिल के कार्यकाल के समाप्ति के समय एक बार फिर उनका नाम अगले संभावित राष्ट्रपति के रूप में चर्चा में था परन्तु आम सहमति नहीं होने के कारण उन्होंने अपनी उमीद्वारी का विचार त्याग दिया।

राष्ट्रपति पद से सेवामुक्त होने के बाद का समय :

राष्ट्रपति पद से सेवामुक्त होने के बाद डॉ कलाम शिक्षण, लेखन, मार्गदर्शन और शोध जैसे कार्यों में व्यस्त रहे और भारतीय प्रबंधन संस्थान, शिल्लोंग, भारतीय प्रबंधन संस्थान, अहमदाबाद, भारतीय प्रबंधन संस्थान, इंदौर, जैसे संस्थानों से विजिटिंग प्रोफेसर के तौर पर जुड़े रहे। इसके अलावा वह भारतीय विज्ञान संस्थान बैंगलोर के फेलो, इंडियन इंस्टिट्यूट ऑफ़ स्पेस साइंस एंड टेक्नोलॉजी, थिरुवनन्थपुरम, के चांसलर, अन्ना यूनिवर्सिटी, चेन्नई, में एयरोस्पेस इंजीनियरिंग के प्रोफेसर भी रहे।

उन्होंने आई. आई. आई. टी. हैदराबाद, बनारस हिन्दू यूनिवर्सिटी और अन्ना यूनिवर्सिटी में सूचना प्रौद्योगिकी भी पढाया था।

कलाम हमेशा से देश के युवाओं और उनके भविष्य को बेहतर बनाने के बारे में बातें करते थे। इसी सम्बन्ध में उन्होंने देश के युवाओं के लिए "व्हाट कैन आई गिव' पहल की शुरुआत भी की जिसका उद्देश्य भ्रष्टाचार का सफाया है। देश के युवाओं में उनकी लोकप्रियता को देखते हुए उन्हें 2 बार (2003 & 2004) 'एम.टी.वी. यूथ आइकॉन ऑफ़ द इयर अवार्ड' के लिए मनोनित भी किया गया था।

वर्ष 2011 में प्रदर्शित हुई हिंदी फिल्म 'आई ऍम कलाम' उनके जीवन से प्रभावित है।

शिक्षण के अलावा डॉ कलाम ने कई पुस्तकें भी लिखी जिनमे प्रमुख हैं – 'इंडिया 2020: अ विज़न फॉर द न्यू मिलेनियम', 'विंग्स ऑफ़ फायर: ऐन ऑटोबायोग्राफी', 'इग्नाइटेड माइंडस: अनलीशिंग द पॉवर विदिन इंडिया', 'मिशन इंडिया', 'इंडोमिटेबल स्पिरिट' आदि।

मृत्यु: 27 जुलाई 2015 को भारतीय प्रबंधन संस्थान, शिल्लोंग, में अध्यापन कार्य के दौरान उन्हें दिल का दौरा पड़ा जिसके बाद करोड़ों लोगों के प्रिय और चहेते डॉ अब्दुल कलाम परलोक सिधार गए।

"सपना वो नहीं है जो आप नींद में देखे, सपने वो है जो आपको नींद ही नहीं आने दे।" - डॉक्टर ए. पी. जे. अब्दुल कलाम

NDA Exam Pattern

Khadakwasla Pune

The entrance for National Defense Academy comprises of a Written Examfollowed by and Intelligence and Personality Test. The details follow:

- The written exam consist of two papers.

Written Examination

Paper	Subject	Duration	Maximum Marks
I	Mathematics	2.5 hours	300
II	General Ability Test	2.5 hours	600

Total	900

General (but important) instructions about written examination

- The General Ability Test consists of

Part	Subject	Maximum Marks
Part A	English	200
Part B	General Knowledge	400
	Total	600

- The papers in all the subjects consist of Objective (multiple choice answer) Type questions only.
- Question Papers of Paper I – Mathematics and Part B of Paper II will be set in English and Hindi.
- SI units will be used in the papers and Candidates should use only International form of Indian numerals (i.e. 1,2,3,4,5,6 etc.) while answering question papers.

- Commission have discretion to fix qualifying marks in any or all the subjects of the examination.
- Candidates are not permitted to use calculators for answering objective type papers (Test Booklets).

For more detailed exam instructions for Conventional and Objective type papers go through Exam instructions

For Syllabus of the papers check the NDA Subject list.

Interview

- The Union Public Service Commission will declare a qualified list of candidates (based on the written exam).
- The selected candidates will appear before a Services Selection Board for Intelligence and Personality Test.
- Candidates for the Army/Navy wings of the NDA and Executive branch of Naval Academy will be assessed on officers potentiality
- Candidates for the Air Force wing, along with officer potentiality assessment, will also undergo a Pilot Aptitude Test.

Two Stage Selection Procedure

- Two stage selection procedure will be based on Psychological Aptitude Test and Intelligence Test.
- Al the candidates will be put to stage one test on first day of reporting at Selection Centres/Air Force Selection Boards.

- Only those candidates who qualify at stage one will be admitted to the second stage.
- Those candidates who qualify stage II will be required to submit the original Certificates along with one photocopy each of :
  - Original Matriculation pass certificate or equivalent in support of date of birth
  - Original 10+2 pass certificate or equivalent in support of educational qualification
- For final qualification, candidates for the Army/Navy and Naval Academy should secure the minimum qualifying marks separately in (i) Written examination and (ii) Officer potentiality test, and candidates for the Air Force should secure the minimum qualifying marks separately in (i) Written examination (ii) Officer potentiality test, and (iii) Pilot Aptitude Test as fixed by the Commission in their discretion.
- Qualified candidates will then be placed in the final order of merit on the basis of total marks secured by them in the Written examination, and the Services Selection Board Tests in three separate lists:
  - Army and the Navy,
  - Air Force
  - Executive course at the Naval Academy.
- The names of candidates who qualify for all the Services of NDA and the Naval Academy will appear in all the three Merit Lists.
- The final selection for admission will be made in order of merit depending on the number of vacancies in each wing.
- The selection will be subject to medical fitness and suitability in all other respects.

- NOTE: A candidate who fails in the Pilot Aptitude Test cannot apply for admission to the National Defence Academy Examination, the Air Force wing or General Duties (Pilot) Branch or Naval Air Arm.

एन आर नारायणमूर्ति

नागवार रामाराव नारायणमूर्ति (जन्म: 20 अगस्त 1946) भारत की प्रसिद्ध सॉफ़्टवेयर कंपनी इन्फोसिस टेक्नोलॉजीज के संस्थापक और जानेमाने उद्योगपति हैं। उनका जन्म मैसूर में हुआ। आई आई टी में पढ़ने के लिए वे मैसूर से बैंगलौर आए, जहाँ १९६७ में इन्होंने मैसूर विश्वविद्यालय से बैचलर आफ इन्जीनियरिंग की उपाधि और १९६९ में आई आई टी कानपुर से मास्टर आफ टैक्नोलाजी (M.Tech) की उपाधि प्राप्त की। नारायणमूर्ति आर्थिक स्थिति सुदृढ़ न होने के कारण इंजीनियरिंग की पढ़ाई का खर्च उठाने में असमर्थ थे। उनके उन दिनों के सबसे प्रिय शिक्षक मैसूर विशवविद्यालय के डॉ० कृष्णमूर्ति ने नारायण मूर्ति की प्रतिभा को पहचान कर उनको हर तरह से मदद की। बाद में आर्थिक स्थिति सुदृढ़ हो जाने पर नारायणमूर्ति ने डॉ० कृष्णमूर्ति के नाम पर एक छात्रवृत्ति प्रारंभ कर के इस कर्ज़ को चुकाया।

कार्य जीवन :

अपने कार्यजीवन का आरंभ नारायणमूर्ति ने पाटनी कम्प्यूटर सिस्टम्स (PCS), पुणे से किया। बाद में अपने दोस्त शशिकांत शर्मा और प्रोफेसर कृष्णय्या के साथ 1965 में पुणे में सिस्टम रिसर्च इंस्टीट्यूट की स्थापना की थी। 1981 मे नारायणमूर्ति ने इन्फ़ोसिस कम्पनी की स्थापना की। मुम्बई के एक अपार्टमेंट में शुरू हुयी इस कंपनी की प्रगति की कहानी आज दुनिया जानती है। सभी साथियों की कड़ी मेहनत रंग लाई और 1991 मे इन्फ़ोसिस पब्लिक लिमिटेड कम्पनी में परिवर्तित हुई। 1999 में कम्पनी ने उत्कृष्टता और गुणवत्ता का प्रतीक

SEI-CMM हासिल किया। 1999 में कंपनी ने एक नया इतिहास रचा जब इसके शेयर अमरीकी शेयर बाजार NASDAQ में रजिस्टर हुए। नारायणमूर्ति 1981 से लेकर 2002 तक इस कम्पनी के मुख्य कार्यकारी निदेशक रहे। 2002 में उन्होंने इसकी कमान अपने साथी नन्दन नीलेकनी को थमा दी, लेकिन फिर भी इन्फोसिस कम्पनी के साथ वे मार्गदर्शक के दौर पर जुड़े रहे। वे 1992 से 1994 तक नास्काम के भी अध्यक्ष रहे। सन 2005 में नारायण मूर्ति को विश्व का आठवां सबसे बेहतरीन प्रबंधक चुना गया।

आज एन आर नारायणमूर्ति अनेक लोगों के आदर्श हैं। चेन्नई के एक कारोबारी पट्टाभिरमण कहते हैं कि उन्होंने जो भी कुछ कमाया है वह मूर्ति की कंपनी इंफोसिस के शेयरों की बदौलत और उन्होंने अपनी सारी कमाई इंफोसिस को ही दान कर दी है। पट्टाभिरमण और उनकी पत्नी नारायणमूर्ति को भगवान की तरह पूजते हैं और उन्होंने अपने घर में मूर्ति का फोटो भी लगा रखा है। उन्हें पद्म श्री, पद्म विभूषण और ऑफीसर ऑफ द लेजियन ऑफ ऑनर- फ्रांस सरकार के सम्मानों से अलंकृत किया जा चुका है। इस सूची में शामिल अन्य नाम थे-बिल गेट्स, स्टीव जाब्स तथा वारेन वैफ़े। हालांकि नारायण मूर्ति अब अवकाश ग्रहण कर चुके हैं लेकिन वे इन्फ़ोसिस के मानद चेयरमैन बने रहेंगे।

SSC CHSL Exam after 12th

SSC CHSL Exam Pattern: Staff Selection Commission's (SSC) Combined Higher Secondary Level (10+2) Examination Pattern are given below...

Scheme of Examination: The examination will consist of a Written Examination and Skill Test for the post of Data Entry Operator and Written Test and Typing Test for the post of Postal Assistant/ Sorting Assistant & Lower Division Clerk on Computer.

Written Examination: The Paper will consist of Objective Type- Multiple choice questions only. The questions will be set both in English & Hindi for Part-I, III & IV.

The written examination will consist of one objective type paper as shown below :

Part	Subject	Maximum Marks
I	General Intelligence (50 Questions)	50
II	English Language (Basic Knowledge) (50 Questions)	50
III	Quantitative Aptitude (Basic Arithmetic Skill) (50 Questions)	50
IV	General Awareness (50 Questions)	50

Note-I: There will be negative marking of 0.25 marks for each wrong answer. Candidates are, therefore, advised to keep this in mind while answering the questions.

Note-II: The Paper will consist of Objective Type- Multiple choice questions only. The questions will be set both in English & Hindi for Part-I, III & IV.

रतन टाटा

रतन नवल टाटा (28 दिसंबर 1937, को मुम्बई, में जन्मे) टाटा समुह के वर्तमान अध्यक्ष, जो भारत की सबसे बड़ी व्यापारिक समूह है, जिसकी स्थापना जमशेदजी टाटा ने की और उनके परिवार की पीढियों ने इसका विस्तार किया और इसे दृढ़ बनाया.

1971 में रतन टाटा को राष्ट्रीय रेडियो और इलेक्ट्रॉनिक्स कंपनी लिमिटेड (नेल्को) का डाईरेक्टर-इन-चार्ज नियुक्त किया गया, एक कंपनी जो कि सख्त वित्तीय कठिनाई की स्थिति में थी। रतन ने सुझाव दिया कि कम्पनी को उपभोक्ता इलेक्ट्रॉनिक्स के बजाय उच्च-प्रौद्योगिकी उत्पादों के विकास में निवेश करना चाहिए जेआरडी नेल्को के ऐतिहासिक वित्तीय प्रदर्शन की वजह से अनिच्छुक थे, क्यों कि इसने पहले कभी नियमित रूप से लाभांश का भुगतान नहीं किया था। इसके अलावा, जब रतन ने कार्य भार संभाला, उपभोक्ता इलेक्ट्रॉनिक्स नेल्को की बाज़ार में हिस्सेदारी 2% थी और घाटा बिक्री का 40% था। फिर भी, जेआरडी ने रतन के सुझाव का अनुसरण किया।

1972 से 1975 तक, अंततः नेल्को ने अपनी बाज़ार में हिस्सेदारी १०% तक बढ़ा ली और अपना घाटा भी पूरा कर लिया। लेकिन 1975 में, भारत की प्रधानमंत्री इन्दिरा गांधी ने आपात स्थिति घोषित कर दी, जिसकी वजह से आर्थिक मंदी आ गई।

इसके बाद 1977 में यूनियन की समस्यायें हुईं, इसलिए मांग के बढ़ जाने पर भी उत्पादन में सुधार नहीं हो पाया। अंततः, टाटा ने यूनियन की हड़ताल का सामना किया, सात माह के

लिए तालाबंदी (lockout) कर दी गई। रतन ने हमेशा नेल्को की मौलिक दृढ़ता में विशवास रखा, लेकिन उद्यम आगे और न रह सका.

1977 में रतन को Empress Mills सोंपा गया, यह टाटा नियंत्रित कपड़ा मिल थी। जब उन्होंने कम्पनी का कार्य भार संभाला, यह टाटा समुह की बीमार इकाइयों में से एक थी। रतन ने इसे संभाला और यहाँ तक की एक लाभांश की घोषणा कर दी.चूँकि कम श्रम गहन उद्यमों की प्रतियोगिता ने इम्प्रेस जैसी कई उन कंपनियों को अलाभकारी बना दिया, जिनकी श्रमिक संख्या बहुत ज्यादा थी और जिन्होंने आधुनिकीकरण पर बहुत कम खर्च किया था रतन के आग्रह पर, कुछ निवेश किया गया, लेकिन यह पर्याप्त नहीं था। चूंकि मोटे और मध्यम सूती कपड़े के लिए बाजार प्रतिकूल था (जो कि एम्प्रेस का कुल उत्पादन था), एम्प्रेस को भारी नुकसान होने लगा.बॉम्बे हाउस, टाटा मुख्यालय, अन्य ग्रुप कंपनिओं से फंड को हटाकर ऐसे उपक्रम में लगाने का इच्छुक नहीं था, जिसे लंबे समय तक देखभाल की आवश्यकता हो. इसलिए, कुछ टाटा निर्देशकों, मुख्यतः नानी पालखीवाला (Nani Palkhivala) ने ये फैसला लिया कि टाटा को मिल समाप्त कर देनी चाहिए, जिसे अंत में 1986 में बंद कर दिया गया। रतन इस फैसले से बेहद निराश थे और बाद में हिन्दुस्तान टाईम्स के साथ एक साक्षात्कार में उन्होंने दावा किया कि एम्प्रेस को मिल जारी रखने के लिए सिर्फ़ 50 लाख रूपये की जरूरत थी।

वर्ष 1981 में, रतन टाटा इंडसट्रीज और समूह की अन्य होल्डिंग कंपनियों के अध्यक्ष बनाए गए, जहाँ वे समूह के कार्यनीतिक विचार समूह को रूपांतरित करने के लिए उत्तरदायी तथा उच्च प्रौद्योगिकी व्यापारों में नए उद्यमों के प्रवर्तक थे।

1991 में उन्होंने जेआरडी से ग्रुप चेयर मेन का कार्य भार संभाला. टाटा ने पुराने गार्डों को बहार निकाल दिया और युवा प्रबंधकों को जिम्मेदारियां दी गयीं.तब से लेकर, उन्होंने, टाटा ग्रुप के आकार को ही बदल दिया है, जो आज भारतीय शेयर बाजार में किसी भी अन्य व्यापारिक उद्यम से अधिक बाजार पूँजी रखता है।

रतन के मार्गदर्शन में, टाटा कंसलटेंसी सर्विसेस सार्वजनिक निगम बनी और टाटा मोटर्स न्यूयॉर्क स्टॉक एक्सचेंज में सूचीबद्ध हुई. 1998 में टाटा मोटर्स ने उनके संकल्पित टाटा इंडिका को बाजार में उतारा.

31 जनवरी 2007 को, रतन टाटा की अध्यक्षता में, टाटा संस ने कोरस समूह (Corus Group) को सफलतापूर्वक अधिग्रहित किया, जो एक एंग्लो-डच एल्यूमीनियम और इस्पात निर्माता है। इस अधिग्रहण के साथ रतन टाटा भारतीय व्यापार जगत में एक प्रतिष्ठित व्यक्ति बन गये। इस विलय के फलस्वरूप दुनिया को पांचवां सबसे बड़ा इस्पात उत्पादक संस्थान मिला.

रतन टाटा का सपना था कि 1,00,000 रु की लागत की कार बनायी जाए. नई दिल्ली में ऑटो एक्सपो में 10 जनवरी, 2007 को इस कार का उद्घाटन कर के उन्होंने अपने सपने को पूर्ण किया। टाटा नैनो के तीन मॉडलों की घोषणा की गई और रतन टाटा ने सिर्फ़ 1 लाख रूपये की कीमत की कार बाजार को देने का वादा पूरा किया, साथ ही इस कीमत पर कार उपलब्ध कराने के अपने वादे का हवाला देते हुये कहा "वादा एक वादा है"

26 मार्च 2007 को रतन टाटा के अधीन टाटा मोटर्स ने फोर्ड मोटर कंपनी से जगुआर और लैंड रोवर को खरीद लिया। ब्रिटिश विलासिता की प्रतीक, जगुआर और लैंड रोवर (Land Rover) 1.15 अरब पाउंड ($ 2.3 अरब) में खरीदी गई।

निजी जीवन :

रतन टाटा एक शर्मीले व्यक्ति हैं, समाज की झूठी चमक दमक में विश्वास नहीं करते हैं, सालों से मुम्बई के कोलाबा जिले में एक किताबों एवं कुत्तों से भरे हुये बेचलर फ्लैट में रह रहे हैं। रतन टाटा ने अपना नया उत्तराधिकारी चुन लिया है। सायरस मिस्त्री रतन टाटा का स्थान

लेंगे लेकिन पूरी तरह उनकी जगह लेने से पहले वो एक साल तक उनके साथ काम करेंगे। दिसंबर 2012 में वो पूरी तरह समूह की जिम्मेदारी संभाल लेंगे। पलौनजी मिस्त्री के छोटे बेटे और शपूरजी-पलौनजी के प्रबंध निदेशक सायरस मिस्त्री ने लंदन के इंपीरियल कॉलेज से सिविल इंजीनियरिंग में स्नातक एवं लंदन बिजनेस स्कूल से प्रबंधन में डिग्री ली है। फिलहाल वो टाटा संस की सबसे बड़ी शेयरधारक कंपनी शापूरजी पैलनजी के प्रबंध निदेशक हैं। सायरस 2006 से ही टाटा समूह से जुड़े हैं, मिस्त्री साल 2006 से ही टाटा संस के निदेशक समूह से जुड़े हैं।

पुरस्कार और मान्यता :

भारत के 50वे गणतंत्र दिवस समारोह पर 26 जनवरी 2000, रतन टाटा को तीसरे नागरिक अलंकरण पद्म भूषण से सम्मानित किया गया। उन्हें 26 जनवरी 2008 भारत के दुसरे सर्वोच्च नागरिक अलंकरण पद्म विभूषण से सम्मानित किया गया। वे नैसकॉम ग्लोबल लीडरशिप (NASSCOM Global Leadership) पुरस्कार -2008 प्राप्त करने वालों में से एक थे। ये पुरस्कार उन्हें 14 फ़रवरी 2008 को मुम्बई में एक समारोह में दिया गया। रतन टाटा ने 2007 में टाटा परिवार की ओर से परोपकार का कारनैगी पदक प्राप्त किया

रतन टाटा भारत में विभिन्न संगठनों में वरिष्ठ पदों पर कार्यरत हैं और वे प्रधानमंत्री की व्यापार एवं उद्योग परिषद के सदस्य हैं। मार्च 2006 में टाटा को कॉर्नेल विश्वविद्यालय द्वारा 26 वें रॉबर्ट एस सम्मान से सम्मानित किया गया। आर्थिक शिक्षा में हैटफील्ड रत्न सदस्य, वह सर्वोच्च सम्मान जो विश्वविद्यालय कंपनी क्षेत्र में प्रतिष्ठित व्यक्तियों को प्रदान करती है

रतन टाटा के विदेशी संबंधों में मित्सुबिशी निगम (Mitsubishi Corporation), अमेरिकन इंटरनेशनल समूह (American International Group), जेपी मॉर्गन चेज़ (JP Morgan Chase) और बूज़ एलन हैमिल्टन(Booz Allen Hamilton) के अंतरराष्ट्रीय सलाहकार बोर्ड की सदस्यता शामिल है। वे दक्षिण अफ्रीका गणराज्य की अंतरराष्ट्रीय निवेश परिषद के बोर्ड सदस्य हैं और न्यूयॉर्क स्टॉक एक्सचेंज के एशिया -पैसिफिक सलाहकार समिति के एक सदस्य हैं। टाटा एशिया पैसिफिक पॉलिसी के रैंड केंद्र के सलाहकार बोर्ड, पूर्व-पश्चिम केन्द्र

के बोर्ड ऑफ़ गवर्नर्स में हैं और बिल और मेलिंडा गेट्स फाउंडेशन (Bill & Melinda Gates Foundation) के भारत एड्स इनिशीएटिव कार्यक्रम बोर्ड में सेवारत हैं। फरवरी 2004 में, रतन टाटा को चीन के झोज्यांग प्रान्त में हांग्जो (Hangzhou) शहर में मानद आर्थिक सलाहकार की उपाधि से सम्मानित किया गया।

उन्हें हाल ही में लन्दन स्कूल ऑफ़ इकॉनॉमिक्स (London School of Economics) से मानद डॉक्टरेट की उपाधि हासिल हुई और नवम्बर 2007 में फॉर्च्यून पत्रिका ने उन्हें व्यापर क्षेत्र के 25 सबसे प्रभावशाली लोगों की सूची में शामिल किया। मई 2008 में टाटा को टाइम पत्रिका की 2008 की विश्व के 100 सबसे प्रभावशाली लोगों की सूची में शामिल किया गया टाटा की अपनी छोटी १ लाख रूपये की कार, 'नैनो' के लिए सराहना की गई। उन महत्तवपूर्ण व्यक्तियों में से एक जिसने अपने वादे का पालन किया।

सम्मान :

रतन टाटा को सन 2000 में भारत सरकार ने उद्योग एवं व्यापार क्षेत्र में पद्म भूषण से सम्मानित किया था। ये महाराष्ट्र राज्य से हैं।

Rankwise* Sorting of Colleges in Indore & Ujjain

ENGINEERING COLLEGES IN INDORE

1. IIT INDORE
2. GSITS
3. IET DAVV (IT/CS)
4. MEDICAPS
5. ACROPOLIS
6. IPS ACADEMY
7. MALWA INSTITUTE
8. CHAMELI DEVI COLLEGE OF SCIENCE AND TECHNOLOGY
9. Sri Aurobindo Institute of Technology Indore
10. S.D. BANSAL COLLEGE
11. PRESTIGE COLLEGE
12. VAISHNAV COLLEGE
13. SYNERGY INSTITUTE OF MANAGEMENT
14. KHALSA COLLEGE
15. SANGHVI INSTITUTE OF MANAGEMENT
16. RISHIRAJ INSTITUTE
17. MATHURA DEVI INSTITUTE OF TECHNOLOGY
18. SHREE ARVINDO
19. STAR ACADEMY
20. VINDHYA INSTITUTE OF SCIENCE AND TECHNOLOGY
21. B.M. COLLEGE OF TECHNOLOGY

22. ORIENTAL INSTITUTE OF MANAGEMENT
23. TRUBA COLLEGE
24. ASTRAL INSTITTUTEOF TECHNOLOGY AND SCIENCE
25. SWAMI VIVEKANAND COLLEGE
26. SHRI VENKATESHWAR INSTITUTE OF TECHNOLOGY

COLLEGES FOR BSC IN INDORE

1. HOLKER SCIENCE COLLEGE
2. DAVV
3. MAHARAJA RANJEET SINGH COLLEGE
4. GUJARATI COLLEGE
5. CHRISIAN EMINENT COLLEGE
6. ACROPOLIS COLLEGE
7. SOFT VISION COLLEGE
8. DADA NIRBHAYA SINGH COLLEGE
9. SHRI VAISHNAV CPOLLEGE
10. B.M. COLLEGE
11. ELVA COLLEGE
12. SANGHVI COLLEGE
13. MAHATMA GANDHI MEMORIAL COLLEGE
14. SHRI GOVINDRAM SAKESRIA COLLEGE
15. MAHARISHI INSTITUTE
16. ANNIE BESANT COLLEGE (ANNAPURNA ROAD)
17. ORIGIN INSTITUTE

18.JAIN DIVAKAR INSTITUTE

19.SHRI RAMSVARUPA MEMORIAL UNIVERSITY

BCA COLLEGES IN INDORE

1. DAVV INDORE
2. SHRI VAISHNAV INSTITUTE
3. CHRISTIAN EMINENT
4. SOFT VISION
5. SANGHVI COLLEGE
6. ELVA COLLEGE
7. ANNIE BESANT COLLEGE
8. PIONEER COLLEGE
9. MAHARISHI INSTITUTE
10. PNB GUJARATI
11. SWASTIKA COLLEGE

MEDICAL COLLEGES IN INDORE

1. SHRI AUROBINDO MEDICAL COLLEGE
2. MODERN MEDICAL COLLEGE
3. INDEX MEDICAL COLLEGE
4. MAHATMA GANDHI MEMORIAL COLLEGE
5. AHILYA MEDICAL INSTITUTE

6. BOMBAY HOSPITAL AND RESEARCH CENTRE

VETERINARY COLLEGE

1. COLLEGE OF SCIENCE AND ANIMAL HUSBANDRY , MHOW (INDORE)

DENTAL COLLEGE IN INDORE

- MODERN DENTSL COLLEGE INDORE
- GOVT. COLLEGE OF DENTISTRY INDORE

PHARMACY COLLEGES IN INDORE

- INDIAN INSTITUTE OF PHATMACY (IIP)
- RKDF COLLEGE
- SWASTIKA COLLEGE OF PHARMACY
- TRUBA COLLEGE

NURSING COLLEGE IN INDORE

- CHOITRAM COLLEGE
- INDORE NURSING COLLEGE
- AASHTA FOUNDATION FOR EDUCATION SOCIETY
- HRITUNJAYA SCHOOL OF NURSING

ENGINEERING COLLEGES IN UJJAIN

- MIT
- SANJEEVANI INSTITUTE

BSC COLLEGES IN UJJAIN

- ADVANCE COLLEGE
- FUTUTRE VISION COLLEGE
- DEPARMENT UNIVERSITY (GOVT.)
- V.S. COLLEGE (MAHANANDA NAGAR)
- MADHAV SCIECE COLLEGE
- BHARTIYA GYANPEETH (FOR GIRLS ONLY)

BCA COLLEGES IN UJJAIN

- ADVANCE COLLEGE
- FUTURE VISION
- DEPARTMENT

MEDICAL COLLEGE IN UJJAIN

- RD GARDY MEDICAL COLLEGE (AGAR ROAD)

COLLEGE FOR BBA IN MASS COMMUNICATION IN UJJAIN

- BHARTIYA GYANPEETH (FOR GIRLS ONLY)

(Note: * Rankwise sorting of colleges is done on the basis of the views of students studying in Indore and Ujjain in related Colleges. This list is not officially declared.)